BCM SCHOO BASANT AVENUE LDH.(2.9.24)
Assignment 3
class IX Hindi M.M-15

I.निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें:-
ले चल नाविक मंझधार मुझे, दे दे बस अब पतवार मुझे,
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रहकर प्यार मुझे।
मत रोक मुझे, भयभीत न कर, मैं सदा कँटीली राह चला,
मेरे पथ के पतझारों में ही नव-नूतन मधुमास पला।
मैं हूँ अबाध, अविराम, अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं,
मैं नहीं, अरे, ऐसा राही जो वेबस-सा मन मार चला।
दोनों ही ओर निमंत्रण है-इस पार मुझे, उस पार मुझे,
रंगीन विजय-सी लगती है, संघर्षों में हर हार मुझे।
मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ, उस पार चलूँ,
मैं मस्त खिलाड़ी हूँ ऐसा, जी चाहे जीतूं, हार चलूँ।
मेरे पतवारों पर साथी ! लहरों की घात नहीं चलती,
मेरी तो आदत ही ऐसी-संघर्ष-बीच हर बार चलूँ।
फिर कहाँ झुका पाएगा यह विप्लवमय पारावार मुझे,
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रहकर प्यार मुझे।
1. राही नाविक से क्या आग्रह करता है-
(क) वह उसे उस पार पहुँचा दे
(ख) उसे नाव खेने दे
(ग) उसे मंझधार में ले चले
(घ) उसे लहरों से टकराने दे।
2. राही नाविक से उसे भयभीत करने को क्यों मना कर रहा है-
(क) राही को भय नहीं होता
(ख) राही सदा कठिन रास्तों पर ही चला है
(ग) राही बेबस लाचार नहीं है
(घ) राही अपने मन का राजा है।
3. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए-
कथन (A)-मैं इस पार रहूँ या उस पार चलूँ, यह मेरी इच्छा पर निर्भर है।
कारण (R)-मैं अपनी इच्छा से हारने-जीतने वाला मस्त खिलाड़ी हूँ।
क. कथन (A) और कारण (R) दोनों ग़लत हैं।
ख. कथन (A) ग़लत है, किंतु कारण (R) सही है।
ग. कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
घ. कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
4. राही अपनी कौन- सी विशेषताएं बताता है?
5.' दोनों ही ओर निमंत्रण है- इस पार मुझे उसे पार मुझे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने किस आध्यात्मिक तथ्य की ओर संकेत किया है?

उत्तरमाला
उत्तर- 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग)

4. राही अपनी विशेषताएँ गिनाता हुआ कहता है कि मैं अबाध हूँ अर्थात् किसी के रोके रुकने वाला नहीं हूँ। मैं विश्राम न करने वाला, कभी न थकने वाला और किसी भी प्रकार के बंधनों को स्वीकार करने वाला नहीं हूँ। मैं अन्य राहियों की तरह विवश और अपने मन को मारकर यात्रा करने वाला राही भी नहीं हूँ।

5. 'दोनों ही ओर निमंत्रण है- इस पार मुझे, उस पार मुझे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने इस आध्यात्मिक तथ्य की ओर संकेत किया है कि यदि मैं भवसागर को पार नहीं कर पाया तो इस संसार में सुनहरा जीवन जीने का निमंत्रण मेरे पास है और यदि भवसागर को पार कर गया तो स्वर्ग के सुख भोगने का निमंत्रण मेरे पास है।
II
1.संस्कृति अस्मिता' किसे कहते हैं? उसका हास क्यों हो रहा है?(उपभोक्तावाद की संस्कृति)
2.नम्से कौन था? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।(लहासा की ओर)
3.हीरा-मोती को गया के साथ जाना क्यों स्वीकार न था? उन्होंने अपना विरोध किस प्रकार प्रकट किया?(दो बैलों की कथा)
4.सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे।"-आशय स्पष्ट कीजिए।(सांवले सपनों की याद)
5.'जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।(उपभोक्तावाद की संस्कृति)

उत्तरमाला
I
उत्तर- 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग)
4. राही अपनी विशेषताएँ गिनाता हुआ कहता है कि मैं अबाध हूँ अर्थात् किसी के रोके रुकने वाला नहीं हूँ। मैं विश्राम न करने वाला, कभी न थकने वाला और किसी भी प्रकार के बंधनों को स्वीकार करने वाला नहीं हूँ। मैं अन्य राहियों की तरह विवश और अपने मन को मारकर यात्रा करने वाला राही भी नहीं हूँ।

5. 'दोनों ही ओर निमंत्रण है- इस पार मुझे, उस पार मुझे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने इस आध्यात्मिक तथ्य की ओर संकेत किया है कि यदि मैं भवसागर को पार नहीं कर पाया तो इस संसार में सुनहरा जीवन जीने का निमंत्रण मेरे पास है और यदि भवसागर को पार कर गया तो स्वर्ग के सुख भोगने का निमंत्रण मेरे पास है।

II
1.उत्तर : 'सांस्कृतिक अस्मिता से अभिप्राय है-अपनी संस्कृति की पहचान: वे संस्कारगत विशेषताएँ, जिनके कारण कोई व्यक्ति किसी समाज-विशेष का अंग माना जाता है। जैसे कि भारतीय संस्कृति की विशेष पहचान अर्थात् सांस्कृतिक अस्मिता है-हमारी वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, अतिथि सत्कार, शादी-विवाह के रीति-रिवाज और हमारी एकता, भाईचारा तथा सर्वधर्म समभाव आदि। आजकल भोगवाद की भावना इतनी प्रबल हो गई है कि हम अपनी सांस्कृतिक विरासतों को सँभालने से कतरा रहे हैं। इसीलिए हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का दिन-पर-दिन हास होता जा रहा है।

2.उत्तर : नम्से बौद्ध भिक्षु था। वह शेकर विहार नामक जागीर का प्रमुख भिक्षु था। जागीर-प्रमुख होने के कारण जागीर के निवासियों में उसका खूब सम्मान था। वह स्वभाव से एक भद्र पुरुष था। उसके हृदय में प्रबंधक या प्रमुख होने का अहंकार नहीं था। वह एक सच्चा साधु था। वह लेखक से बड़े प्रेमपूर्वक मिला। लेखक भिखमंगे की वेशभूषा के कारण उससे किसी आदर-सम्मान या स्नेह की अपेक्षा नहीं करता था, परंतु नम्से ने उसके साथ सम्मान और प्रेमपूर्ण व्यवहार किया।
3.उत्तर : हीरा और मोती स्वाभिमानी और स्वामिभक्त बैल थे। वे अपने मालिक झूरी के यहाँ हर दशा में प्रसन्न थे। वे खूब मन लगाकर काम भी करते थे। गया के साथ जाना उन्हें बिलकुल अच्छ इसलिए नहीं लग रहा था, क्योंकि उन्हें लगा कि स्वामी ने उनकी कोई कमी देखकर ही उन्हें गया के हाथों बेच दिया है। उनके मन में रोष था, इसलिए उन्होंने गया के साथ जाना स्वीकार न किया।

4.उत्तर -सालिम अली अपने प्रकृति-प्रेम के चलते खुले संसार में खोज करने निकले थे। वह किसी टापू की तरह एक स्थान पर बँधकर नहीं रहे और न ही पक्षियों के संसार तक सीमित रहे। उन्होंने अथाह असीम सागर की लहरों के समान प्रकृति के प्रत्येक रहस्य और सौंदर्य को छूने का प्रयास किया। प्रकृति में तन्मय होकर उन्होंने प्रकृति के अनेकानेक रहस्य खोजकर अपने अनुभवों का संसार समृद्ध किया।
5.उत्तर : उपभोक्तावाद संस्कृति हमारे जीवन को सूक्ष्म ढंग से परिवर्तित कर रही है। इसके प्रभाव से हमारा चरित्र तक बदलता जा रहा है। हम उत्पादों का प्रयोग करते-करते उनके दास होते जा रहे हैं। हमने अब जीवन का लक्ष्य ही उपभोग को मान लिया है। जीवन में नित नए उत्पादों का प्रयोग और उपभोग ही हमारे जीवन का उद्देश्य हो गया है। इससे रिश्ते-नाते, संबंध हमारे लिए गौण हो गए हैं। हम व्यक्तिकेंद्रित हो गए हैं, केवल स्वार्थ ही हमें लक्ष्य के रूप में दिखता है। इस प्रकार जाने-अनजाने आज के माहौल में हमारा चरित्र बदल रहा है और हम उत्पादों को समर्पित होते जा रहे हैं।